International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 01-06-2020; Accepted: 15-06-2020; Published: 02-07-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 10-12

तुलनात्मक साहित्य:संकीर्णता से व्यापकता की ओर

सिराजुल हक
हिंदी विभाग, पॉण्डिच्चेरी विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी, भारत

प्रस्तावना

वर्तमान दौर में तुलनात्मक साहित्य महत् चर्चित विषय है। वैसे तो परिस्थिति, मूल्यबोध, सभ्यता, मान-मर्यादा, सामाजिक रूचिबोध के साथ-साथ राजनैतिक, सांस्कृतिक, अर्थनैतिक दृष्टि से भेद हैं, फिर भी लोगों में आवेग-अनुभूति, आशा-आकांशा, चिंता-चर्चा, ध्यान-धारणा में काफी समन्वय तथा सादृश्य देखने को मिलता है। इसकी जाँच-पड़ताल तुलनात्मक अध्ययन पर टिकी है। प्रत्येक साहित्य के अंदर गुण-दोष विद्यमान हैं, जो तुलनात्मक अध्ययन से छानबीन संभव है। इस प्रकार अध्ययन से मानवीय, नैतिक मूल्यों और संस्कृति की मूल संवेदना को बरकरार रखने में कामयाब होता है।

तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक और विस्तृत है। तुलनात्मक साहित्य का अंग्रेजी प्रतिशब्द कंपरेटिव लिटरेचर है। तुलनात्मक अध्ययन साहित्य की वह शाखा है जिसमें दो या दो से अधिक विषय, कवि, लेखक, प्रवृत्ति, भिन्न भाषायी, राष्ट्रीय या सांस्कृतिक समूहों के साहित्य का अध्ययन किया जाता है। असल में तुलनात्मक साहित्य सृष्टिशील रचना की विशेष शाखा नहीं है और यह साहित्य का विशेष प्रकार भी नहीं है। यह एक प्रकार से समालोचना, विचार और साहित्य अध्ययन की एक प्रक्रिया है। साथ-साथ यह भी स्पष्ट होता है कि इसका लक्ष्य एक ही है, न ही विविधता है। तुलनात्मक साहित्य विश्व के विभिन्न देश, काल तथा भाषा में रचित साहित्य का सम्यक अध्ययन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए आज यह एक स्वतंत्र विधा के रूप में उभर रहा है या उभरा है। विदेश तथा भारतवर्ष के काफी सारे विश्वविद्यालयों में यह एक स्वतंत्र शाखा के रूप में मान्यता प्राप्त है। अतः हम समग्र दृष्टि से देखें तो तुलनात्मक साहित्य की व्यापकता असीम है। संक्षेप में कहा जाता है कि तुलनात्मक अध्ययन का संकुचित तथा संकीर्णता के विरोध में व्यापकता लाना इसका प्रमुख उद्देश्य है। आज विश्व-मनुष्य तथा वसुदैव कुटुम्ब के लिए यह अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

तुलनात्मक साहित्य नाम से अभिहित पद में दो शब्द समाहित है। जिसको एक साथ विचार-विमर्श करने में कुछ हद तक दिक्कतें आती है। अपने सुविधानुसार इसे अलग-अलग दायरे में रखकर अध्ययन करना अधिक मायने रखता है, जोकि तुलनात्मक का अर्थ सिर्फ तुलना ही है यानी तुलना पर ही इसका केंद्रबिन्दु टिका हुआ है। तुलना का अंग्रेजी शब्द कंपैयर है। डॉ.हरदेव बाहरी ने तुलना शब्द का काफी सारे नामों से नामकरण किया है। उनके अनुसार "तुलना का अर्थ समता, मापित होना, तौल में समान होना, सधकर स्थित होना, सधना, सन्नद्ध या उतारू होना, सादृश्य, बराबरी, मिलान, उपमा, उठाना आदि। इसी परिदृश्य में तुलनात्मक शब्द का अर्थ कई वस्तुओं के गुणों की समानता और असमानता दिखानेवाला"[1] (जैसे तुलनात्मक अध्ययन) आदि। अतः तुलनात्मक शब्द साहित्य के साथ जोड़ने से सम्पन्न होता है, अन्यथा तुलनात्मक शब्द मूल्यहीन यानी कहीं ना कहीं कमी महसूस होती है। अतः आप कह सकते हैं कि तुलनात्मक और साहित्य दोनों एक दूसरे के परिपूरक हैं, लेकिन ऐसा नहीं। क्योंकि साहित्य अपने आप में पूर्ण है। जिसमें साहित्यकारों के सृजनात्मक कर्म का योगदान है।

साहित्य का अंग्रेजी प्रतिशब्द लिटरेचर है। जिसका अर्थ ज्ञान तथा साहित्य का अध्ययन। डॉ.हरदेव बाहरी के अनुसार साहित्य का अर्थ "लिपिबद्ध विचार, ज्ञान, ग्रंथों का समूह, वाङमय, काव्यशास्त्र. गद्यात्मक या पद्यात्मक रचना"[2] आदि। अतः साहित्य ज्ञानों का समूह है, जिसमें साहित्यांग (काव्य, कहानी, नाटक, निबंध, उपन्यास, आलोचना, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र आदि) समाहित है। इसलिए साहित्य कोई मौखिक विधा का अंग नहीं है। यह एक लिखित रचना है। हॉ कुछ हद तक काल्पनिक चीजों का समाहार है। जोकि देश, भाषा, समय, स्थान, कला-संस्कृति आदि सारी चीजें समाहित है। इससे यह निष्कर्ष निकल कर आता है कि साहित्य तुलना पर निर्भर नहीं है। तुलना और साहित्य दोनों एक ही पद के अलग-अलग शब्दमात्र है। अतः तुलनात्मक साहित्य का अर्थ तुलनात्मक रचना का समुदाय।

तुलना कोई नई चीज नहीं है। तुलना प्रकृति के सृजन के साथ ही शुरू हुई। मानव प्रकृति का एक अपरिसीमित अंग है। मानव तुलना का पहला द्वार स्वरूप है। जोकि मानव तथा मानव जाति जन्म से ही तुलना का आधार स्तम्भ रहा है। जैसे- एक बच्चे के जन्म होने के बाद उसके शरीर के पूरे अंगोंपांग उसके पितृ-मातृ, पूर्वजनों तथा आत्मीय स्वजनों के साथ तुलना की जाती है। और कहा जाता है कि अमुक का बच्चा तमुक की तरह हुआ है, एकदम अविकल, हूबहू है। इसी तरह यदि आप कहें कि तुलना पैदाइश प्रक्रिया है, इससे मुझे लगता है कि कोई बढ़ा-चढ़ा वर्णन नहीं होगा। जैसाकि मानव सामाजिक स्तर पर पहुँचा है, तब वह समाज का एक अंग बन गया है तथा मानव एक सामाजिक प्राणी है। जिस तरह नदी का पानी ज्वार-भाटा(बढ़ता-घटता) होता रहता है ठीक उसी तरह समाज भी परिवर्तनशील है। जैसाकि हम यदि देखें कि आदिम काल और वर्तमान काल की परिस्थिति संपूर्ण एक-दूसरे के विपरीत है। समाज परिवर्तन के साथ-साथ मानव मन का विकास तथा मानव मन की चिंता-चर्चा का भी विकास होता रहा है। साहित्य इसी मानव मन के चिंतन-मनन का एक अतुलनीय अवदान स्वरूप है। इसी चिंता-चर्चा का समृद्धि के लिए अनुकरण, परंपरा तथा प्राचीन काल के विभिन्न उपादान का आश्रय लिया गया है। जो परवर्ती समय में तुलना का रूप धारण कर लेता है। इसीलिए तुलना को जन्मजात प्रवृत्ति कहें तो अधिक नहीं होगा।

मनुष्य की बौद्धिक शक्ति के विकास के लिए एक साहित्य का अध्ययन काफी नहीं है। इसके लिए तरह-तरह के साहित्य अध्ययन की जरूरत है। क्योंकि ज्ञान कोई सीमित तथा संकुचित चीज नहीं है जो हम एक ही साहित्य से पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकें। जैसाकि डॉ करबी डेका अपनी किताब में लिखते हैं कि- "one who knows Bible alone, knows nothing of the Bible"[3] अर्थात् जो केवल वाइबेल को पढ़ा है, वह बाइबेल के बारे में कुछ नहीं जानता इसलिए आज एकाधिक भाषा, अंचल तथा देश-विदेश का साहित्य अध्ययन अत्यंत जरूरी है। तुलनात्मक अध्ययन इस क्षेत्र के लिए आसान तरीका है। जो संभव भी है। फिर भी यदि देखा जाये तो तुलनात्मक साहित्य किसी सीमित दायरे में सीमाबद्ध नहीं है, यह अत्यंत विस्तृत क्षेत्र है। रीमर्क कहते हैं कि-"national literature would

[1] डॉ.हरदेव बाहरी-राजपाल हिन्दी शब्दकोश, पृ-367

[2] वहीं, पृ-825

[3] डॉ करबी डेका-तुलनामुलक साहित्य और अनुवाद कला, पृ-4

be the study of literature within walls, comparative literature across walls and general literature above walls"[4] अर्थात् राष्ट्रीय साहित्य सीमाबद्ध है, लेकिन तुलनात्मक साहित्य सीमाबद्ध नहीं है, वह सीमा को लाँघ सकते हैं और सामान्य साहित्य सीमा से ऊपर।

मानव पृथ्वी का वह प्राणी है जिसमें ज्ञान, विवेक, बुद्धि तथा समझने की सारी ताकत है। जो दुनिया का अविच्छिन्न अंग है, न कि बँटा हुआ है। यह बँटवारा का जो मामला हमने अपने सुविधानुसार बनाया है। लेकिन दुनिया तथा समग्रता की दृष्टि से मानव सब एक ही है, क्योंकि उनकी दृष्टि में न कोई अमीर, न कोई गरीब, न कोई जाति-पाँति की समस्या, सब इंसान है। भले ही लोगों के रंग परिस्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न है। आज इसी रंग-विरंग, ऊँच-नीच की समस्या मानव द्वारा सृजन की गई है। यदि हम गहराई से चिंतन-मनन करें तो निष्कर्ष यह निकल कर आता है कि वर्ग विभाजन की जड़ मानव ही है। ठीक उसी तरह साहित्य भी भाषा, समय, भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग रूप में बँटा हुआ है। अतः एक ही भू-मंडल के रहनेवाले मनुष्य की सारी स्थिति की जानकारी के लिए तुलनात्मक साहित्य का अत्यंत आवश्यक है। नीचे दिये दो चित्रों से तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा का अर्थ निकलकर आता है। चित्र 1 में और चित्र 2 के द्वारा अलग-अलग क्षेत्र को चित्रित किया गया है। जिसकी विशेषताएँ इस प्रकार- **चित्र**

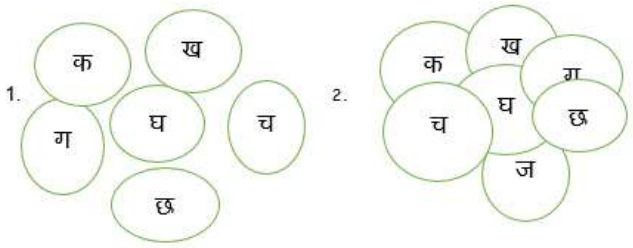

क.एकल चर पद्धति
ख.एकक क्षेत्र, राष्ट्र, देश को दर्शाता है,
ग.इसका दृष्टिकोण भी अलग- अलग,
घ.भाषा, राष्ट्र तथा समय में विविधता है,
ङ.स्वतंत्र तो है, लेकिन एक-दूसरे के साथ संपर्क अपनी इच्छा के ऊपर।

चित्र 2.

क.परस्पर संपर्कयुक्त है,
ख.एक उद्देश्य,
ग.वसुधैव कुटुम्बम्,
घ.सार्वजनिकता, सार्वभौमिक, सर्वकालिक रूप स्पष्ट होता है।

अतः चित्र 1 के वृत्त में एक-एक अक्षर से अलग-अलग क्षेत्र को चित्रित किया गया है। जिसे आप मानव जाति के एक-एक रूप तथा साहित्य का बिन्दु भी मान सकते हैं। और चित्र 2 में विविध क्षेत्रों के कला, संस्कृति, भाषा, साहित्य का समन्वय दिखाया गया है। जो चित्र 1 और 2 में क्रमशः साहित्य की विविधता और एकता का सामंजस्य दिखाया है। जोकि तुलना से ही संभव हो सकता है। एक साहित्य तथा दूसरे साहित्य की विविध विधाओं के साथ तुलना करते हुए साहित्य के आंतरिक तथा उसकी जड़ तक पहुँचने की कोशिश की जा सकती है। इसी तरह तुलनामूलक साहित्य की विकास प्रक्रिया शुरू हुई।

तुलना का विस्तार तीव्र गति से हो रहा है। समाज-संस्कृति का आदान-प्रदान(लेन-देन) के लिए तुलना की भूमिका अन्यतम है। जैसे पुर्तगाली के लोटा-घँटी हमारी संस्कृति का अंग बन गया है। ठीक उसी प्रकार हमारी पहचान दूसरे के समाज-संस्कृति में देखने को मिलता है। इन क्षेत्रों में अनुवाद की भूमिका अग्रणी है। जिसे हम अस्वीकार नहीं कर सकते हैं। अनुवाद साहित्य को तुलनात्मक साहित्य की धरोहर मान सकते हैं। अनुवाद के जरिए एक भाषा दूसरे साहित्य की भाषा के करीब जा सकती है और उसकी छान-बीन कर सकते हैं। यदि हम छठी शतीं की बात करें तो हिवेंचाङ नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने 645 से 664 शती के बीच 74 विभिन्न भाषाओं की किताबों का चीनी भाषा में अनुवाद किया है। इस प्रकार अनुवाद साहित्य के द्वारा तुलनात्मक भाषा साहित्य का विस्तार होने लगा। भारतीय आर्य-संस्कृति में ग्रीक का प्रभाव है जो हम खारिज़ नहीं कर सकते हैं। इस प्रसंग में सुनीति कुमार चटर्जी ने कहा-"The ancient Greek, Sanskrit, Avestan, Hebrew and chinse literature have an uninterrupted history from same 3000 years and more, and one are now becoming alive to the submerged influence of the earlier literature on this"[5] अर्थात् प्राचीन, ग्रीक, संस्कृत, अवेस्तान, हिब्रु और चीनी साहित्य लगभग 3000 सालों तक का निरंतर इतिहास है, जो वर्तमान समय में भी हम इन भाषाओं में निहित प्राचीन साहित्य के प्रभाव के प्रति क्रमानुसार सचेतन हो रहे हैं।

दरअसल जब हम किसी बात पर चर्चा करते हैं तब हम तुलना की सहायता लेते हैं। इसी तरह तुलनात्मक साहित्य कोई एक निर्दिष्ट भाषा विशेष का अध्ययन नहीं है, यह किसी भी भाषा की अंतरात्मा की गहराई तक पहुँचने की पद्धति है। इसके द्वारा साहित्य को कोना-कोना झाँकने की मदद मिलती है। और कालक्रमानुसार इसके अध्ययन-अध्यापन के दौरान विश्वसाहित्य की जानकारी के लिए सही राह दिखाता है। अतः हम कह सकते हैं कि तुलनात्मक साहित्य का मुख्य उद्देश्य विश्वसाहित्य को उपलब्ध कराना। और सत्य का प्रचार-प्रसार करना इसका धर्म है। जैसाकि विश्व में करोड़ों लोग हैं, जिनकी भाषा, संस्कृति, वातावरण क्षेत्रानुसार भिन्न है। लेकिन एक चीज हमें माननी होगी कि हर किसी का खून लाल ही होता है, इसमें कोई गुंजाइश नहीं है। भले ही परिवेश के अनुसार उसके रंग, तौर-तरीका, खान-पान, रहन-सहन अलग-अलग हैं। और जिस प्रकार वह हठात् चोट लगने से प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। जोकि यह मनुष्य जाति का सार्वजनीन अनुभव है। मसलन भाषा अलग-अलग होने के कारण साहित्य भी अलग-अलग बन गया। परंतु साहित्य रचने की भावना तथा विचारधारा समाज व देशकाल ही होता है। मोटे तौर पर साहित्य का प्राण एक ही है। जैसाकि-कुरान, वाइबल, रामायण आदि महान ग्रंथ का उपदेश भी यही है। इसके अतिरिक्त यदि हम आजकल के साहित्य को देखें तो उसमें भी काफी सारी चींजों में समानता देखने को मिलती है। जैसाकि-नागार्जुन के 'वरुन के बेटे' और सैयद अब्दुल मलिक(असमिया) के 'सूरुजमुखीर स्वप्न'। इन दोनों उपन्यासों में मछुआरे की जीवन शैली और उसके रहन-सहन की स्थिति को उजागर किया है। कालिदास और शेक्सपीयर के नाटकों का अध्ययन ओर एक उदाहरण है। अतः विश्व साहित्य अलग-अलग होने के नाते उसकी विशेषताएँ व लक्षण काफी हद तक एक ही है। जिसमें विश्व मानव का अस्तित्व व एकता का संकेत मिलता है।

तुलनात्मक साहित्यिक विधा को लेकर वाद-विवाद का बयान रहा है। कुछ विद्वानों ने इसे स्वतंत्र विधा घोषित किया है। कुछ विद्वानों ने इसके विपक्ष में अपनी अपनी बात रखी है। जैसे- क्रोचे के अनुसार-"तुलनात्मक साहित्य एक स्वतंत्र विद्यानुशासन बन ही नहीं सकता क्योंकि किसी भी साहित्यिक अध्ययन के लिए तुलना एक आवश्यक अंग है।"[6] तुलनात्मक साहित्य को स्वतंत्र तथा वास्तविक विषय रूप के में प्रयोग करने के कुछ महत्वपूर्ण कारण हैं जो इस प्रकार-

क.राजनीतिक पृष्ठभूमि,
ख.उपनिवेशिक शक्ति का संकट,
ग.पूँजीवाद का उत्थान,
घ.परिवहन व्यवस्था की तरक्की और विस्तार,
ङ.तत्व, तकनीकी, ज्ञान का प्रचार-प्रसार,

[4] वहीं, पृ-3

[5] दिलीप बरा-तुलनात्मक साहित्य,पृ-18

[6] डॉ.इन्द्रनाथ चौधरी- तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, पृ-3

च.सांस्कृतिक माध्यम का विकास(सिनेमा, नाटक तथा अन्य माध्यम),

छ. अनुवाद कला आदि।[7]

उपरोक्त कारणों तथा बिंदुओं पर हम गहराई से विचार-विश्लेषण करें तो तुलनात्मक साहित्य के विकास में इन सारे बिंदुओं की अहम भूमिका रही है। बगैर इन सारी चीजों को छोड़कर तुलनात्मक साहित्य का प्रचार-प्रसार तथा उद्भव-विकास अपूर्ण है। अतः प्राचीन काल की राजनीतिक पृष्ठभूमि से लेकर अब तक की आधुनिक तकनीकी, कला पद्धति का वाहन के रूप में तुलनात्मक साहित्य का अपरिसीमित योगदान रहा है। जिस प्रकार साहित्य तीव्र गति से अग्रसर हो रहा है, ठीक उसी प्रकार तुलनात्मक अध्ययन का मूल्य भी बढ़ता जा रहा है। लेकिन ध्यान देने की बात है कि साहित्य के परिवर्तन के साथ-साथ इसका दृष्टिकोण बदलने लगा। इसके विस्तारित रूप की जड़ यूरोप को माना जाता है। अर्थात् तुलनात्मक साहित्य का उद्भव-विकास का केंद्रबिंदु यूरोप को ही मान्यता प्रदान की गयी है। यह एक विषय के रूप में बीसवीं शती की शुरुआत में प्रतिष्ठित हुआ। लेकिन इसका ढ़ाँचा 16वीं शती की और निर्माण कार्य तथा व्यापक रूप का श्रेय भी उसी शती को दिया जाता है। उस समय यूरोप में व्यापक रूप में तकनीकी का विकास हुआ और वहाँ के लोग दुनिया की नई-नई चीजों से परिचित होने लगे। और उनकी चिंता-चर्चा का भी विकास होने लगा और परिवर्तन होने लगा। जैसाकि- अरब, चीन, जापान तथा भारत आदि देशों से संपर्क होने लगा और एक-दूसरे की भाषा-संस्कृति को जानने की जरूरत पड़ी। जोकि उन्होंने तुलना को ही एक उत्तम उपाय चुना।

छठी शती से यूरोपीय साहित्य जगत में काफी बदलाव होने लगा और व्यावहारिक दुनिया में विस्तार होने लगा। उनका कहना है कि साहित्य एक ही है। इसलिए उन्होंने यूरोपीय साहित्य के द्वारा विभाजित दुनिया की एकता और समन्वय का संधान करने लगा। इसी तरह फ्रांस, जर्मनी, इंलैण्ड तथा इटली आदि देशों की भाषिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से यूरोपीय साहित्य को एकक साहित्य तक सीमित न रह कर साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन को महत्व प्रदान किया है। अतः यूरोपीय चिंताविदों ने केवल एकक साहित्य पर ध्यान न देकर यूरोपीय क्षेत्र की दूसरी भाषा तथा अन्य देशों एवं राष्ट्र के साहित्य के साथ संपर्क स्थापित करते हुए एकक साहित्य विस्तार के लिए महत्व प्रदान किया है। इसी तरह यूरोपीय साहित्य अध्ययन में परिवर्तन हुआ और तुलना के सार्वभौमत्व पर विचार प्रदान किया है।

लगभग बीसवीं शती में तुलनात्मक साहित्य के विचारकों ने तुलनात्मक साहित्य के लिए विभिन्न देश, जाति तथा जातीय विशेषताओं का उद्धार और प्रतिष्ठा के लिए तुलनात्मक साहित्य शामिल किये जा रहे हैं। तुलनात्मक साहित्य एक स्वतंत्र धारा के रूप में अमरिका, चीन, रशिया जैसे विकासशील देशों में देखने को मिलता है। इसके अध्ययन के लिए फ्रांस स्कूल, कनाडियन स्कूल, जर्मन स्कूल, अमरीकी स्कूल, चीनी स्कूल आदि स्थापना की गई है। केवल यहीं नहीं भारत में भी इसका विकास तेजी से हो रहा है। अतः हम देखें तो आज दुनिया भर में तुलनात्मक साहित्य का महत्व जोर-शोर से बढ़ रहा है और लगभग 100 से ज्यादा विश्वविद्यालयों में अध्ययन भी हो रहा है। फ्रांस के अधिकतर विश्वविद्यालय, जर्मन, इटली, रशिया, आस्ट्रिया, स्विजरलैण्ड, पोलैण्ड, हंगरी, यूगोस्लोविया आदि देशों के विश्वविद्यालयों में तुलनात्मक साहित्य का स्वतंत्र विभाग शुरू किया है।

तुलनात्मक साहित्य का उद्भव और विकास का श्रेय मैथ्यू अर्नल्ड को दिया जाता है। जिसने 1848 में 'comparative literature' नामक पद प्रयोग किया था। उसके बाद 1886 में हार्डसन मेकाले पसनट ने 'comparative literature' नामक ग्रंथ की रचना कर इस अध्ययन पद्धति की चोटी(ऊँचाई स्थान) दखल किया था और इस क्षेत्र में अधिक चर्चित भी हुए थे। हम कह सकते हैं कि यहीं से तुलनात्मक साहित्य का राहों का अन्वेषण शुरू हुआ। अर्थात् यही से तुलनात्मक अध्ययन का द्वार खुला गया। सन 1901 में 'science of comparative literature' नामक एक प्रबंध रचना की। जिसमें तुलनात्मक साहित्य की पद्धति, स्वरुप तथा विचार-विश्लेषण किया गया है। सन 1907 में कवि गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय साहित्य परिषद में 'comparative literature' शीर्षक में भाषण प्रदान किया था। टैगोर ने अंग्रेजी पद 'comparative' को भारतीय भाषा में विश्व साहित्य पद प्रयोग किया था। उसके बाद 1956 में कलकत्ता के यादवपुर विश्वविद्यालय में सबसे पहले तुलनात्मक साहित्य का पाठ्यक्रम खुला है। इसी तरह भारत के साथ-साथ विश्व के बहुत सारे विश्वविद्यालयों में तुलनात्मक साहित्य का उद्भव-विकास हुआ।

अतः हम कह सकते हैं कि तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र संकीर्ण नहीं रहा है। इसकी व्यापकता पूरी दुनिया में फैल गई। तथा वह समष्टि से व्यष्टि तक बहता पानी की तरह फैल रहा है। और यहीं एकमात्र उपाय है, जो समग्र पृथ्वी को जानने के लिए सहायक बन सकता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ.हरदेव बाहरी-'हिंदी शब्दकोश', राजपाल, दिल्ली, संस्करण-2012
2. इन्द्रनाथ चौधुरी-'तुलनात्मक साहित्य की भूमिका', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, संस्करण-1983
3. डॉ.दिलीप बरा-'तुलनात्मक साहित्य', चन्द्रप्रकाश, गुवाहाटी, तृतीय संस्करण-2016
4. डॉ.करबी डेका हाजरिका-'तुलनामूलक साहित्य आरु अनुबाद-कला', बनलता, गुवाहाटी, द्वितीय संस्करण-2014

[7] दिलीप बरा-तुलनात्मक साहित्य,पृ-19